

कर भला हो भला

चम्पापुट में कुलधर्ट नाम का एक साधारण गृहस्थ रहता था। कुलधर्ट के पिता श्रेष्ठी धर्मधर्ट बड़े ही धार्मिक और नीतिनिष्ठ गृहस्थ थे। उन्होंने युक्त दिन कुलधर्ट को अपने पास बुलाकर कहा—

बत्स ! अब मेरा अनिम समय आ गया है। पदलोक प्रस्थान करने से पूर्व मैं तुम्हें दो बातें कहना चाहता हूँ।

पिताजी, आप जो कहेंगे उसको पालन करने का मैं वचन देता हूँ।

धर्मधर्ट—

बत्स ! मैंने जीवन में सत्य, सदलता और सादगी को ही धर्म समझा है। तुम भी इसी मार्ग पर चलोगे तो कभी कष्ट नहीं पाओगे।

और जो श्री कनाओ उसका एक सोलहवाँ भाग शुभ कार्यों में खर्च करता, तुम्हारी लकड़ी कभी नहीं घटेगी।

पिताजी ! आपकी दोनों बातें मैंने गाँठ बाँध लीं। मैं अवश्य इनका पालन करूँगा।

कुलधर्ट पिता की शिक्षा के अनुसार नीतिपूर्वक अपना जीवन चला रहा था। कुलधर्ट की पत्नी कुलानन्दा ने क्रमशः सात पुत्रियों को जन्म दिया। सातों ही दंग-लप में एक से एक सुन्दर थीं।



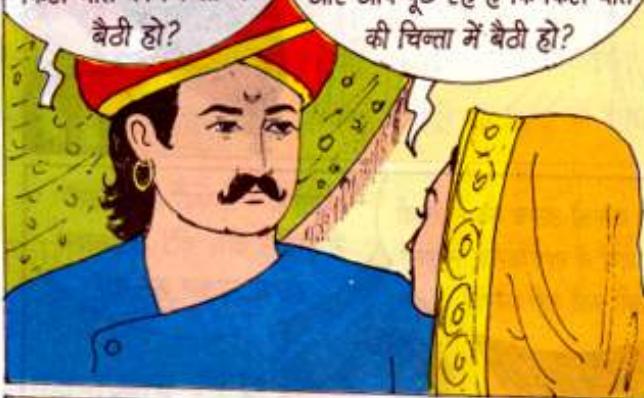
एक दिन कुलानन्दा उदास बैठी थी। कुलधर्ट ने पूछा—

प्रिये ! क्या बात है?
किस बात की चिन्ता में
बैठी हो?

स्वामी ! हमारे सात-सात पुत्रियाँ हैं
और आप पूछ रहे हैं कि किस बात
की चिन्ता में बैठी हो?

कुलधर्ट ने समझाया—

तू इनकी चिन्ता मत कर, हट कन्या जन्म से
अपना भाग्य साथ लेकर आती है। अगर इनके
भाग्य में सुख लिखा है तो एक से बढ़कर एक
घर और वर मिलेगा।



वे दोनों आपस में बातें कर ही रहे थे कि द्वादश पट एक वृद्ध महिला ने पुकारा—



